E-ISSN: 3049-1541
KNOWLEDGE FLAME
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (KF-IMRJ)
(An International Indexed & Peer Reviewed Journal)
https://knowledgeflame.in PRGI Reg. No. MAHMUL/2024/89852

"मोहन राकेश की कहानियों में सामाजिक चेतना"

प्रा. डॉ. मारोती उत्तमराव खेडेकर
हिन्दी विभाग
स्व. नितीन महाविद्यालय पाथरी

प्रसिध्द साहित्यीक आलोचक अमृतराम कहानी की सामाजिकता के संदर्भ में कहते हैं- "किस्सा कहने सुनने की आदिम भूख में से ही कहानी का जन्म हुआ है। और अपने इस जन्मजात गुण या स्वभाव की रक्षा करके ही एक वह जीवित रह सकती है। क्योंकि कहानी सामाजिक विधा है, जन्म से ही एक आदमी कहानी कहता है, दुसरा आदमी सुनता है, वही दूसरा आदमी समाज है और वही कहानी की सामाजिकता का आधार है।"[१] समाज के बिना मनुष्य का आस्तीत्व नही है। समाज की बुनियाद ही मनुष्य है। समाज और मनुष्य एक दुसरे के पुरक है। मनुष्य सामाजिक और विचारशील प्राणी है। वह अपनी अनेकानेक आवश्यकताओ की पूर्ति समाज व्दारा करता है, वही अपनी भावनाओं और संवेगो को भी संप्रेषित करने के लिए समाज का आधार ही ढूँढता है। समाज के संदर्भ से हटकर माननीय संबंधो की व्याख्या करना निरर्थक और असंभव है।

सन १९५० के आसपास की कहानियाँ जिसे 'नयी कहानी' के नाम से जाना जाता है। इस कहानी ने पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरूष के बनते-बिगडते संबंध, अर्थ का बढता प्रभाव, व्यक्ति में निराशा, कुंठा, असुरक्षा, मानसिक तनाव, अविश्वास, दाखित्वहीनता आदि को सशक्त स्वर व्दारा उभारा है, "नयी कहानी में पारिवारिक विघटन तो है ही सामाजिक जीवन से बिगडते संबंधो को भी विविध कोणों से प्रस्तुत किया है। स्त्री-पुरूष के बिगडते संबंध बिखरने लगे, उस बिखराव का सामाजिक आयामों सहित चित्रण भी नयी कहानी की देन है। इन संबंधो की टकराहट के कारण अनेक है। जिसमें अर्थाभाव स्त्री की जीविकोपार्जन में सहयोग देने की भूमिका नौकरी के कारण बदलती हुई मानसिकता का यथार्थ चित्रण उसके विभिन्न परिणामों के साथ चित्रित हुआ है। इसमे टुटते हुए पुरूष की तरह बिखरती नारी का भी चित्रण है।"[२]

"जागरूक कथाकार की हर कहानी उसके सामाजिक संघर्ष की दिशा में एक कदम होती है। और यही दिशा उसकी हर छोटी से छोटी कहानी को बृहतर अर्थवता प्रदान करती है।"[३] राकेशजी की कहानियों के संदर्भ में इस कथन की सत्यता पूरी तरह से प्रमाणित होती है। राकेशजी ने

समसामायिक युग की सत्य कडवाहट का कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से अपनी कहानियाँ में चित्रण किया है।

मोहन राकेश युगचेताना कहानीकार के रूप में हमारे सामने आते है। वह अपने परिवेश के प्रति गहरी जागरूकता लिए हुए है। जो उनके साहित्य को सहज ही सामाजिकता से सलग्न कर देता है। डॉ. धनंजय वर्मा के शब्दों में ''इनकी कहानियों में युग के सामाजिक यथार्थ और वस्तु सत्य के संदर्भ में जीवन की बहुत तल्ख प्रतिक्रिया, बदलते हुए विश्वासों को गति देती चेतना और एक संक्रमणशील दृष्टि मिलती है। लेकिन मूल्यों की इस संक्रोति में भी विघटन और ध्वंश की गति और टूटते ढहते विश्वासों की कगारों पर भी एक आंतरिक मानवीय आस्था और निष्ठा एवं दृष्टि का संकेत भी उनकी कहानियों में मिलता है।''[४]

१) पति-पत्नी के संबंधो की समस्या :-

पति-पत्नी का रिश्ता तन-मन से जुडा एक संपूर्ण खूबसूरत और पूरक रिश्ता है। यदि दोनों का सुखद साथ जिन्दगी और परिवार को आनंद से भर देता है तो उसे सफल दाम्पत्य जीवन कहा या माना जाता है। सफल दाम्पत्य जीवन खूबसूरत फूलो की सेज के समान है, किन्तु जब पति-पत्नी के बीच कभी-कभी कुछ कारणों से वैमनस्य बढने लगता है तब यह फुल गिरने लगते है मुरझाने लगते है। कभी कभी तो सुन्दर फूलों की जगह कैक्टस उगे नजर आणे लगते है। फिर उसकी चुभन दाम्पत्य संबंधो को खोखला बनाकर टूटने की कगार पर पहुँचा देती है।

भारतीय समाज में विवाह सामाजिक रूप से अनिवार्य संस्थान है। वही धार्मिक दृष्टि से एक पवित्र बंधन माना गया है किन्तु आधुनिक समय के बदलते संदर्भो में संबंध मान्यताओ के आधार पर नही जीवन की स्थितियों के अनुसार जिये जा रहे है। बदलते समय प्रवाह में आज देखे तो नैतिक मूल्यो की परवाह किये बिना स्त्री-पुरूष मनमाने ढंग से स्वतंत्र जीवन जीने लगे है। जिसके परिणाम स्वरूप वैवाहिक संस्थान की अनिवार्यता को प्रश्नचिन्हो के कटघरे में खडा कर दिया है। क्योकि जहाँ पर पारस्परिक विश्वास न हो, सम सुख-दु:खभागी दृष्टीकोण न हो, समर्पक और त्याग न स्वीकारा जाता हो ''वहा विवाह मीनिगलैस सी रस्म तो होगा ही। आज विवाह एक समझोत है पति का पत्नी से, पत्नी का पति से। इस संधीपत्र पद हस्ताक्षर करके निर्वाह करना दोनों का दायित्व है।''[५]

२) पारिवारिक विघटन :-

आजादी से पूर्ण संयुक्त परिवार में आपसी विश्वास आस्था और समर्पण के आधार पर मानवीय संबंधो का निर्वाह होता था। किन्तु स्वातंत्र्योत्तर काल के बदलते जीवन मूल्यो और परिस्थितीयों ने व्यक्ति, समाज और परंपरागत पारिवारिक संरचना को पूर्णत: प्रभावित कर दिया है। सामाजिक व्यवस्था बडी तेजी से परिवर्तन की ओर अग्रेसर होती दिखाई दी और पारिवारिक इकाई टूटती नजर आने लगी। परंपरागत सामाजिक मूल्यो का विघटन, स्त्री शिक्षा का बढता प्रभाव और स्वावलंबन, यांत्रिकीकर महानगरीय जिन्दगी का प्रभाव महत्वकांक्षा की बढती आकांक्षा, व्यावसायिक

व्यवस्तता, गाँवो से रोजगार की तलाश में शहर का भटकाव, रोजगार की समस्या अस्तित्व रक्षा का प्रश्न, बढते अर्थ के अभाव और प्रभाव ने मानवीय संबंधो में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

इस बदलती परिस्थितियों का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर भी देखा जाता है। इस कथाकाल की अधिकांश कहानियाँ नये संबंधों के बनने की कहानियाँ नही, संबंधों के टूटने की कहानियाँ है। सारे संबंधो से टूटा व्यक्ति अधिक से अधिक अकेला और अजनबी होता दिखाई देता है। साथ ही पीछली पीढी के प्रति अविश्वास, घृणा और आपस में अपरिचय, अनिश्चय आदि यथार्थ भी 'नयी कहानी' के माध्यम से बार-बार सामने आने लगे।

राकेशजी की कहानियाँ युग विषय के जीवन की गंभीर भूमिका निर्वाह करने में सक्षम है। साथ ही अपनी कहानिये के माध्यम से राकेशजी ने अपने सार्थक अनुभवों की अभिव्यक्ती भी सशक्त रूप में की है। "राकेश के कथा साहित्य में चित्रित पारिवारिक और वैयक्तिक विघटन हमें अपने ही पडोस के किसी परिवार और व्यक्ति का विघटन मालूम पडता है।"[६] राकेशजी ने अपनी कुदके कहानीयों में पारिवारिक विघटन की स्थितियों को यथार्थ रंग देकर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

३) बच्चों की समस्या :-

राकेशजी ने समाज की विविध समस्याओं को अपनी कहानियों में सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है। राकेशजी की दृष्टी से बच्चो कि समस्या भी अछूती नही रही है। वैसे देखा जाय तो पति-पत्नी के जीवन संबंधी विविध समस्याओं पर राकेशजी ने अपनी लेखनी चलायी है और पति-पत्नी संबंधों से जुडे विविध पहलुओं का विश्लेषण किया है। पती-पत्नी के बीच तनाव अहंकार आदि से उत्पन्न होनेवाले संघर्ष और उबभरे संबंध का सीधा असर बच्चो के मानस पर पडता है। 'पहचान', 'एक और जिन्दगी', 'खाली नन्ही', 'छोटी सी चीज', आदि जैसी कहानिया में राकेशजी ने बालमनोविज्ञान का आधार लेकर बच्चों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

बच्चों की समसया को सशक्त रूप से अभिव्यक्ति देणेवाली कहानियाँ में 'पहचान' कहानी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस कहानी में राकेशजी ने पति-पत्नी के तनाव से उत्पन्न विवाह संबंध की समाप्ती के बाद माँ के पुन:विवाह से उत्पन्न बच्चे की मानसिकता को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। 'पहचान' कहानी का शिवजीत इस मानसिकता का शिकार है। स्कूल में उसका नाम शिवजीत सचदेव से शिवजीत अवरोल कर दिया जाता है। जब क्लास में उसकी हाजिरी शिवजीत अवरोल कहकर ली जाने लगी और उसको सचदेव की जगह अवरोल से पुकारा जाने लगा तब "आसपास से कई आँखे आधी पैनी उसकी तरु धूम गई कुछ आँखे सिर्फ एक दूसरी की तरु घूमकर हल्की मुस्काराहनें के बाद फिर सीधी हो गयी। हाजिरी का जवाब देने के बाद से उसके कान सुर्ख हो गए थे। उस सुखी की आँच उसे अपने गालो पर फैलती महसूस हो रही थी। पीठ और गरदन

की गाँठ पर जैसे छिपकली को झाड देने की कोशिश की। मगर इससे उसे लाग जैसे छिपकली गाँठ के अंदर धसती जा रही है।''

४) मूल्य विघटन :-

स्वतंत्रता के बाद के समय में मूल्य विघटन से पूरे समाज में तीव्रता से परिवर्तन के चिन्ह दिखायी देने लगे और छठे दशक में तो मूल्यों में व्यापक विघटन का दौर शुरू हुआ। समाज में अमानवीयकरण विसंस्कृतीकरण के साथ तमाम जीवन मूल्यों में बहुस्तरिय विघटन सामने आया। मानव संबंधों में स्नेहहीनता, अजनबीपन एवं पारिवारिक एवं दाम्पत्य संबंधो में संवादहीनता, बिखराव, टुटन आदि दिखाई देने लगे। सरकारी कार्यालय और राजनितीक स्त्री-पुरूष के संबंधो में यौन स्वच्छंद तथा स्वच्छंदी संबंधो की भटकन दिखाई देने लगी। सारी की सारी व्यवस्था एवं तंत्र प्रदूषित हो उठा।

वैयक्तिक, सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक, नैतिक विघटन को स्वातंत्र्योत्तर युगीन कहानीकारों ने अपने विषय के रूप में प्रस्तुत किया है। नयी कहानी ने समाज में आये इस बहुस्तरीय विघटन को अनेक स्तरोपर महसूस करते हुए बडी सच्चाई से इसे अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

राकेशजी अपने समाज के प्रति सजग एवं विचारशील व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आते है। उन्होने अपने लेखकीय दायित्व को निभाते हुए समाज के बीच होने वाले परिवर्तन और उससे होने वाले मूल्य विघटन को सही रूप में पकड ने की कोशिश की है। अतः राकेशजी की इस विषय संबंधी कहानियाँ साहित्य की समाज शास्त्रीय व्याख्या के अध्ययन मे भी महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में स्वीकृत की गई है।

संदर्भ :-

१) हिन्दी कहानी पहचान और परख - अमृतराय, सै. इन्द्राथ मदान, पृ.७

२) मोहन राकेश और उनका साहित्य - डॉ. कविता शनवरे, पृ.७२

३) कहानी नयी कहनी - नामवरसिंह, पृ.६०

४) नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति - सं. देवीशंकर अवस्थी, पृ.१९१

५) कथा लेखिका मलू भंडारी - डॉ. व्रज मोहन मिश्र, पृ.४१

६) मोहन राकेश का साहित्य पारिवारिक संबंधो के विघटन की स्थितियाँ - डॉ. सुनीता, पृ.१३१

७) मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ, 'पहचान', पृ.२७०.